Result Mitra Daily Magazine

IPBES की NEXUS रिपोर्ट

➢ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में 17 दिसंबर को जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर सरकारी मंच आईपीबीईएस (IPBES, Intergovernmental Science–Policy Platform on Biodiversity and Ecosystem Service) ने जैव विविधता, जल, खाद्य और स्वास्थ्य के बीच अंतर्संबंधों पर एक मूल्यांकन रिपोर्ट जारी की है।
- नेक्सस असेसमेंट के नाम से जाने जाने वाली IPBES की यह रिपोर्ट विश्व के स्तर पर जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, भोजन, जल और मानव स्वास्थ्य के बीच अंतर्संबंधों का पता लगाती है।
- इस रिपोर्ट को जारी करते हुए रिपोर्ट के सह–अध्यक्ष पाम मैकएलवी ने कहा कि जैव विविधता, जलवायु, भोजन, पानी और मानव स्वास्थ्य को एकल मुद्दे वाले संकट के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि ये आपस में जुड़े हुए संकट है।
- IPBES के 11वें सत्र द्वारा स्वीकृत यह नेक्सस रिपोर्ट दुनिया के सभी क्षेत्रों के 57 देशों के 165 प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा 3 वर्ष तक गहन अध्ययन के बाद जारी किया गया है।

➢ IPBES क्या है ?

- जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर सरकारी विज्ञान नीति मंच (IPBES) एक स्वतंत्र अंतर–सरकारी निकाय है।
- इस अंतर–सरकारी निकाय की स्थापना 21 अप्रैल 2012 में 94 देशों की सरकारों द्वारा "पनामा सिटी" में की गई थी।
- इस अंतर–सरकारी निकाय की स्थापना का मूल उद्देश्य जैव विविधता के संरक्षण और सतत उपयोग, दीर्घकालीन मानव कल्याण और सतत विकास के लिए जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए विज्ञान नीति इंटरफेस को मजबूत करना है।
- IPBES जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वही भूमिका निभाता है जो जलवायु परिवर्तन के लिए प्रसिद्ध इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) निभाती है।
- IPCC के तरह ही IPBES जैव विविधता पर समेकित आकलन करने के लिए केवल मौजूदा ज्ञान का मूल्यांकन करता है।

- IPBES कई बहुपक्षीय पर्यावरणीय प्रक्रियाओं जिसमें संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी (CBD), कन्वेंशन ऑन कॉम्बेटिंग डेजर्टीफिकेशन (CCD), द रामसर कन्वेंशन ऑन वेटलैंड्स, कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन डेंजरस स्पीशीज और जैव सुरक्षा पर कार्टाजेना प्रोटोकॉल के तहत अपने विचारों को सूचित करता है।
- IPBES द्वारा पहली रिपोर्ट वर्ष 2019 में तैयार की गई थी, जिसमें वैश्विक जैव विविधता के लिए खतरे का आकलन किया गया था।
- वर्ष 2019 में प्रकाशित इस रिपोर्ट में पाया गया कि वैश्विक स्तर पर पाए जाने वाले 8 मिलियन पौधों एवं जानवरों की प्रजातियां में से लगभग 10 लाख प्रजातियां विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही है, जिसका मुख्य कारण मानव गतिविधियों के कारण पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन था।
- इस रिपोर्ट में कहा गया था कि पृथ्वी की लगभग 75% भूमि की सतह और 66 प्रतिशत समुद्री वातावरण में काफी बदलाव आया है और 85% से अधिक आर्द्र भूमि नष्ट हो गई है।
- IBPES की इस रिपोर्ट को आधार मानकर ही कुनमिंग–मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क तैयार किया गया, जिसे वर्ष 2022 में एक अंतरराष्ट्रीय समझौता के रूप में अंतिम रूप से शामिल किया गया।
- इस अंतरराष्ट्रीय समझौते के आधार पर ही जैव विविधता के नुकसान को रोकने के लिए वर्ष 2030 तक 23 लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

➢ क्या कहती है ताजा रिपोर्ट ?

- IPBES की हालिया नेक्सस मूल्यांकन रिपोर्ट में पांच पहचानी गई वैश्विक चुनौतियां (जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, भोजन, जल और मानव स्वास्थ्य) के बीच मजबूत अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला गया है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि इन पांचों वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि इनमें से किसी एक पर की गई सकारात्मक कार्यवाही का परिणाम दूसरों पर नकारात्मक प्रभाव का कारण न बने।

➢ जैव विविधता :

- इस रिपोर्ट में बताया गया है कि विश्व के सभी क्षेत्रों में जैव विविधता में गिरावट के परिणामस्वरुप भोजन, जल, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन पर गंभीर परिणाम डालते हैं।

- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जैव विविधता मानव अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह जल और खाद्य आपूर्ति को बनाए रखने के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को मजबूत करने सहित जलवायु की स्थिरता में योगदान देती है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले 30–50 वर्षों के दौरान जैव विविधता में 2 से 6% तक की गिरावट आई है।
- इसमें कहा गया है कि जैव विविधता की इस गिरावट का मुख्य कारण भूमि और समुद्र के उपयोग में परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का अत्यधिक दोहन और प्रदूषण है।

➤ खाद्य सुरक्षा :

- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक स्तर पर खाद्य उत्पादन बढ़ाने का प्रयास भूख और कुपोषण से निपटने के लिए एक सकारात्मक प्रयास है लेकिन भूमि, जल संसाधनों और जैव विविधता पर इसका नकारात्मक परिणाम हो सकता है।
- खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए असंवहनीय कृषि प्रणालियां जैव विविधता की हानि सहित अत्यधिक जल उपयोग, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन में योगदान दे रही है।
- खाद्य प्रणालियों से जुड़े तत्वों पर नकारात्मक प्रभाव के कारण जैव–विविधता में कमी आई है।
- वैश्विक कृषि जैव विविधता में गिरावट आ रही है जिसमें खाद्य और कृषि के लिए आनुवंशिक संसाधन भी शामिल है, जिसके परिणामस्वरुप पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यप्रणाली पर पड़ रहा है।

➤ मानव स्वास्थ्य :

- मानव स्वास्थ्य के बारे में इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्तमान में वैश्विक स्तर पर जीवन प्रत्याशा में वृद्धि और शिशु मृत्यु दर का कम होना आंशिक रूप से खाद्य उत्पादन में वृद्धि और खाद्य पदार्थों का वैश्विक पहुंच के कारण है।
- हालांकि इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक स्तर पर कई संक्रामक और गैर–संक्रामक रोगों में वृद्धि के लिए जैव विविधता की हानि, अस्वास्थ्यकर आहार, स्वच्छ पानी की कमी, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसे अन्य कारक जिम्मेदार है।

➤ पानी :

- इस रिपोर्ट में स्वच्छ पानी के बारे में कहा गया है कि मीठे पानी की जैव विविधता स्थलीय जैव विविधता की तुलना में तेजी से नष्ट हो रही है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि अस्थिर मीठे पानी की निकासी, आर्द्र भूमि क्षरण और वनों की कटाई ने दुनिया के कई क्षेत्रों में जल की गुणवत्ता को कम कर दिया है, जिससे जैव विविधता, जल और

खाद्य उपलब्धता प्रभावित हो रही है, जिसका प्रभाव मानव स्वास्थ्य सहित पौधों और जानवरों पर पड़ रहा है।

- विभिन्न मानव गतिविधियों के कारण वैश्विक स्तर पर कई समुद्री प्रणालियां क्षीण हो गई है।

➤ जलवायु परिवर्तन :

- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति और परिमाण के माध्यम से जैव विविधता, जल, खाद्य उत्पादन और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न कर रहा है।
- विभिन्न चरण मौसम की घटनाएं जैसे गर्म लहरें, बाढ़, सूखा और जंगल की आग मानव स्वास्थ्य को सीधा प्रभावित करता है, जो रोगाणुओं के फैलाव में मदद करता है।
- जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्री जैव विविधता जैसे प्रवाल भित्तियों की अपरिवर्तनीय क्षति हो रही है तथा तटीय मत्स्य पालन पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- पिछले 50 वर्षों में चरम मौसम, जलवायु और जल संबंधी लगभग 12,000 से अधिक घटनाओं के कारण लगभग 2 मिलियन लोगों की मृत्यु हुई है।